शब्द की शक्तियों की विवेचना करें। Dr. Uma Pathak
Deptt. of Skt.
III Part (Content)

शब्द शक्ति का अर्थ है - शब्द की अभिव्यञ्जक शक्ति। शब्द एवं अर्थ के संबंध को शब्द शक्ति कहते हैं। अर्थात् शब्दों के अर्थों की बोधिका है - शब्द शक्ति।

शब्दों के तीन-भेद वाचक, लाक्षणिक और व्यञ्जक माने गए हैं, इस आधार पर अर्थ भी तीन ही प्रकार के हैं - वाच्य, लक्ष्य और व्यंग्य।

शब्द की जिस शक्ति के द्वारा साक्षात् संकेतित अर्थ की प्रतीति होती है उसे वाचक या अभिधा कहते हैं। 'उस शब्द' का यही अर्थ होगा, यह व्याकरण आदि के द्वारा नियंत्रित होता है - 'साक्षात् संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः (मम्मट)' संस्कृत आचार्यों ने शब्द शक्ति का विवेचन पूर्ण रूपेण किया है, क्योंकि यह साहित्य का विचारणीय विषय है। वाक्यपदीयकार भर्तृहरि ने शब्द-शक्ति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है - 'जिस प्रकार ब्रह्मरूपी अधिष्ठान पर जगत रूपी अध्यास की विधात्री उसी की शक्ति है, उसी प्रकार अर्थ रूपी अध्यास की विधात्री ~~उसी~~ की शब्द की शक्तियाँ होती हैं।'

सीधे ढंग से अर्थ का बोधक होने के कारण इसे मुख्यार्थ भी कहा जाता है, (इसमें मुख्यार्थ की ही प्रधानता होती है।) इस शक्ति से जिस अर्थ का बोध होता है, वह वाच्य कहलाता है। यथा - 'गो' शब्द, अभिधा से सास्ना ककुद आदि लक्षणों से युक्त चतुष्पाद प्राणी का साक्षात् रूप से बोध होता है।

पतंजलि ने अपने महाभाष्य के पस्पशाह्निक में 'गो' शब्द की व्याख्या करते हुए इसका स्पष्ट उल्लेख किया है - 'गौरित्यत्र कः शब्दः? येन उच्चारितेन सास्ना लाङ्गुल

कश्चित् संप्रत्ययो भवति स गोशब्दः।' अर्थात् जिस शब्द के उच्चारण मात्र से सास्नालांगुलककुद खुर और सींग युक्त किसी जीव की सम्यक् प्रतीति होती है, वही गौ शब्द है।

शब्द की स्वाभाविक शक्ति को सभी लोग स्वीकार नहीं करते, अर्थ बताने में कुछ लोग रूढ़िसम्मति अर्थात् लोक प्रसिद्धि को ही स्वीकार करते हैं। उनके मत में लक्षणा और व्यञ्जना की भाँति ही अभिधा भी आरोपित किया जाता है।

इस प्रकार अभिधा शब्द की पहली शक्ति मानी गयी है, जो शब्दों के शब्दकोशीय अर्थ का बोध कराती है।

पं० जगन्नाथ ने भी इसकी परिभाषा देते हुए कहा शब्द एवं अर्थ के परस्पर संबंध को अभिधा कहते हैं।

आचार्य भट्टनायक ने अभिधा शब्द शक्ति को विशेष महत्व देते हुए बताया - रस की अनुभूति कराने में अभिधा शब्द शक्ति ही प्रधान है। अभिधा के द्वारा ही पहले अर्थ बोध होता है।

साहित्य दर्पण में पं० विश्वनाथ ने बताया -

'तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाभिधा (अग्रिमभिधा)।'

इस प्रकार शब्द के जितने प्रकार के अर्थ होते हैं, भाषा के जितने प्रकार के अभिप्राय होते हैं, उतने ही प्रकार की शब्द की शक्तियां होती हैं, इनके आधार पर तीन में पहली अभिधा का यह विवेचन है। यह अर्थ, व्याकरण कोश और व्यवहारादि सम्मत है।